हुवल वारिसुल करीम, बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जीवन परिचय

सरकार आलम पनाह (वारिसे पाक) के खादिम ख़ास हज़रत हाजी फ़ैज़ू शाह वारसी रह.

तारीखे विलादत:- किबला हज़रत हाजी फ़ैज़ू शाह वारसी की पैदाइश दिनांक 28 मार्च सन् 1827 ई0 में आपके आबाई वतन मौज़ा बेहमा ज़िला सीतापुर में हुई आपके पिता का नाम श्री मुन्नू मियाँ था।

कृपया ध्यान दीजिये—

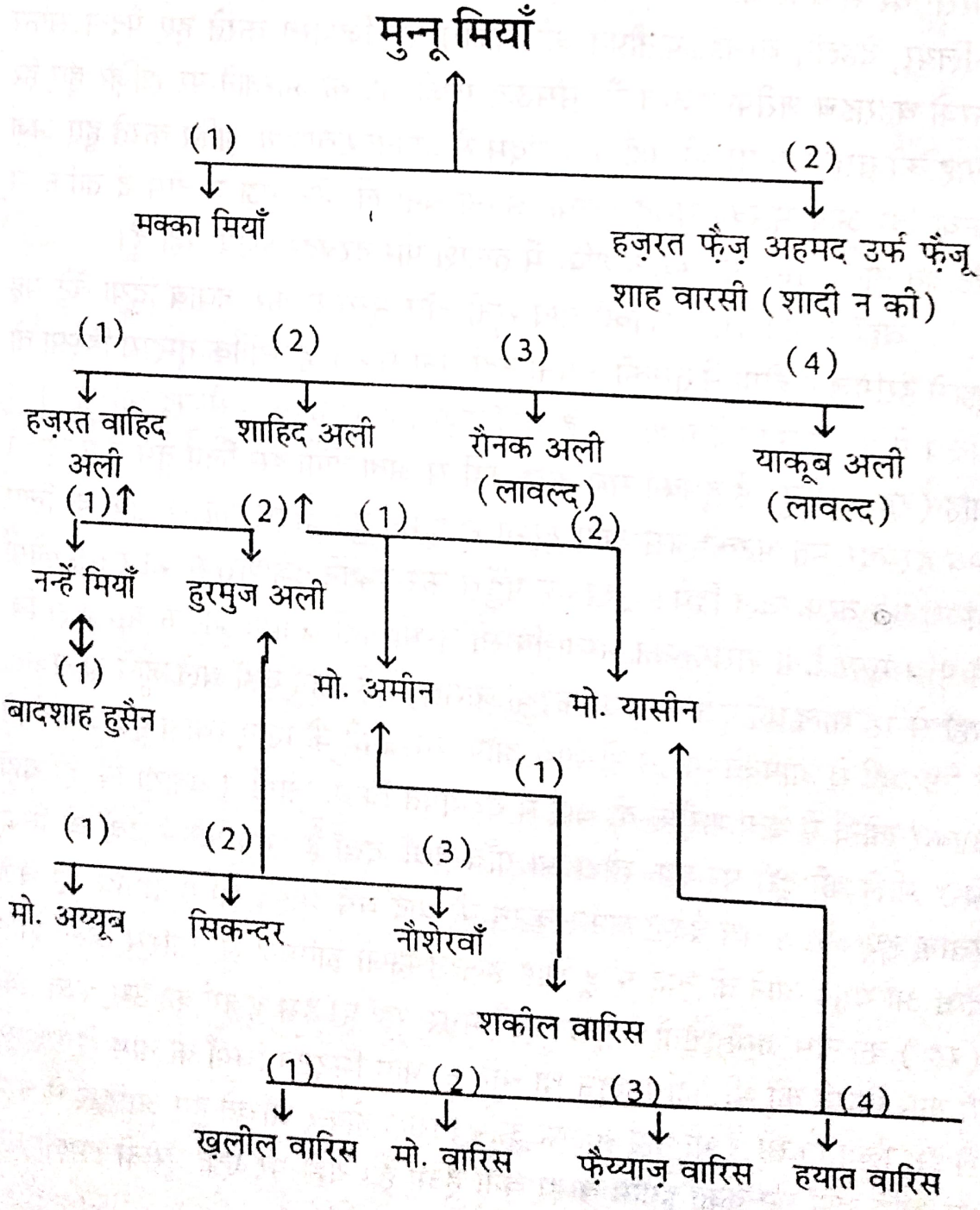

श्री मुन्नू मियाँ गाँव के निहायत संजीदा आदमी थे जिनका आबाई पेशा खेती था। फ़ैज़ अहमद उर्फ फ़ैजू शाह का ध्यान बचपन से घरेलू काम में नहीं लगता था। उनका रुझान दुनिया से कुछ अलग ही था कुछ दिनों के बाद आप अपने ननिहाल बनेहरा बीरबल चले आये जो सीतापुर जिलें में वाक़े है ये बेहया से तकरीबन एक मील की दूरी पर है ये शुरू से ही नमाज़ रोज़े के पाबन्द थे। उन्होंने 20 वर्ष की आयु में पैदल हज किया।

इह दिनस्सिरातल मुस्तकीमा सिरातल्लज़ीना अनअ़मता अलैहिम

तरजुमा:- ऐ अल्लाह हमें उन लोगों के रास्ते पर चला जिन लोगों के रास्ते पर तूने इनआ़म नाजिल किया था जिनको इनआम से नवाज़ा।

सूरे फातिहा की इस आयत पर बड़ा ग़ौर करके वर्ष 1856 ई. में फ़ैजू शाह वारसी घर से बगैर बताये निकल पड़े और तलाशे पीर विभिन्न जगहों जैसे अजमेर, कलियर, देहली, बम्बई, पानीपत की मजारों की ज़ियारत करते हुए पैदल सफर करके बहराइच शरीफ हज़रत सै. मसऊद ग़ाज़ी रह. के आस्ताने पर हाज़िर हुए हर जगह की तरह यहाँ पर भी वहाँ के ख़ादिम से अपनी ख्वाहिश ज़ाहिर करते हुए अर्ज़ किया कि आप मुझको मुरीद करके अपना बना लें और मुझे तालीम दें ताकि मैं हिदायत वाला रास्ता पा सकूँ क्योंकि मैं तलाशे पीर दरबदर भटक रहा हूँ।

वहाँ के ख़ादिम ने उनकी बात सुनी और मुस्कुरा कर जवाब दिया बेटे यह मुझसे हरगिज़ न होगा मैं तुमको अपना नहीं बना सकता हूँ क्योंकि तुम्हारा हिस्सा तो अवध में एक मकाम देवा शरीफ है जहाँ हज़रत हाजी हाफ़िज़ सैय्यद वारिस अली शाह (रह.) मौजूद हैं तुमको सब कुछ वहीं से अ़ता होगा इस लिए तुम वहीं जाओ अब दरबदर मत भटको बस आप खुशी से झूमते हुए दीदारे वारिस पाक के लिए अवध की तरफ चल दिये। लखनऊ पहुँच कर इन्होंने देवाशरीफ का रास्ता लोगों से पूछा मगर देवा शरीफ का रास्ता किसी ने भी नहीं बताया बल्कि यह कहा कि यहाँ से 16 मील की दूरी पर एक कस्बा बाराबंकी है आप वहाँ चले जायें हो सकता है कि वहाँ से आपको मालूम हो जाय आप बाराबंकी के लिए रवाना हुए बाराबंकी आकर लोगों से देवा शरीफ के बारे में दरयाफ्त किया लोगों ने बताया कि हाँ यहाँ से 7 मील की दूरी पर एक छोटा सा गाँव देवाँ-देवाँ है आप फौरन देवाँ के लिए रवाना हुए और 5 वर्ष पैदल सफर करने के बाद वर्ष 1861 ई0 में दोपहर 12 बजे देवा आ गये। आने के बाद फ़ैजू शाह हज़रत हाजी हाफिज सै. वारिस अली शाह (रह.) का नामे नामी लोगों से पूछने लगे मगर यहाँ पर इस बुजुर्ग का उस वक्त तक ये नाम किसी को भी नहीं मालूम था बल्कि आप मिट्ठन मियाँ के नाम से मशहूर थे इस लिए किसी ने भी नहीं बताया आप निराश होकर सोंचते हुए आखिर में वहाँ पर आये जहाँ इस वक्त इमाम बाड़ा बना हुआ है। यहीं पर एक पुरानी इमली का

वृक्ष था। जिसकी जड़ पर एक वृद्धा बैठी हुई थीं हज़रत फ़ैज़ू शाह ने उनकी उम्र को देखकर विचार किया कि हो सकता है कि इनको मालूम हो हाजी फ़ैज़ू ने उस वृद्ध माता से पूछा कि ऐ माँ क्या यहाँ कोई सैo हाजी हाफिज वारिस अली शाह नाम के कोई बुजुर्ग रहते हैं। बूढ़ी माँ ने उत्तर दिया नहीं बेटे बल्कि एक मिट्ठन मियाँ नाम के एक बुजुर्ग हैं वह भी हमको बुजुर्ग ही लगते हैं तुम वहाँ जाकर मालूम कर लो वो सामने की झोपड़ी में लेटे होंगे जो अब दिन में 2 बजे खुलेगी यह झोपड़ी वहीं पर थी जहाँ अब किबला आलम पनाह आराम फरमाँ हैं। फ़ैज़ू शाह मियाँ दो बजे की प्रतीक्षा करने लगे वक्त आया और दो बज गया झोपड़ी का दरवाज़ा खुला और फ़ैज़ू शाह ने अन्दर प्रवेश किया। आलम पनाह देखते ही मुस्कुराकर बोले क्या फ़ैज़ू बहराइच के ख़ादिम ने मुरीद नहीं किया इतना सुनते ही फ़ैज़ू शाह आलम पनाह की ख़िदमत में हाज़िर होकर कदमों पर गिर पड़े सरकार ने शफक़त का हाथ फेरा और फरमाया तुम हमारे हो हमारे हो अब कहीं मत जाना फ़ैज़ू शाह ने बेहद खुश होकर सिर उठाया ओर बोले सरकार आपका ये सब करम है वरना।

''मैं कहाँ दामने सरकार कहाँ''

आलम नवाज़ की नवाज़िश करम कि आपने फरमाया सुनो फ़ैज़ू आज से तुम हमारी ख़िदमत करो और रोज़ाना अपनी माँ को सलाम करने जाया करो फ़ैज़ू शाह ने जवाब दिया जो सरकार का हुक्म बन्दा नाचीज़ आपके करम से अंजाम देगा सरकार आलम पनाह को बाद नमाज़ फ़जिर नाश्ता कराने के बाद फ़ैज़ू शाह अपने ननिहाल बनेहरा जो देवाँ से 12 कोस की दूरी पर है वाल्दा को सलाम करने के लिए पैदल चल देते थे और बड़े इतमेनान दोपहर 12 बजे बनेहरा पहुँच जाते और ज़ोहर की नमाज़ फ़ैज़ू शाह बनेहरा अपनी बगिया में पढ़ते बाद ज़ोहर वहाँ से चलते असिर की नमाज़ रास्ते में अदा करते और मग़रिब की नमाज़ देवा शरीफ में सरकार के साथ पढ़ते यह काम बिला नाग़ा 12 वर्षों तक अन्जाम दिया और जब वाल्दा की मृत्यु हो गई तब सरकार आलम नवाज़ ने 1873 ई0 में फ़ैज़ू शाह को एहराम अ़ता करके नाम फ़ैज़ू शाह वारसी रखा और फरमाया कि तुम फ़ैज़ू हमारे बहुत ही ख़ास हो और तुम ही हमारे राज़दार हो और तुम वारसियत को बुलन्द करोगे और तुम्हारे ज़रिये एक बहुत बड़ा काम होगा जिसके सबब तुम मसलके वारसी में ख़ादिम ए ख़ास के लक़ब से पुकारे जाओगे। फ़ैज़ू शाह ये जुम्ले (वाक्य) सुनकर बेहद खुश हुए सिर झुकाकर अर्ज़ किया सरकार सब आपकी नज़रे करम है आपकी हर बात हर फरमान हर क़ौल

हक़ है, हक़ है, हक़ वारिस, अल्ला वारिस

या वारिस

ये वाक्य सबसे पहले कहने वाले हाजी फ़ैजू शाह वारसी ही हैं।

आवश्यक नोट:- हज़रत फ़ैजू शाह वारसी पंज वक्ता नमाज़ के पाबन्द थे आपका सामाने सफ़र- मुसल्ला, रस्सी से बंधा लोटा तस्बीह और केवल शरीर से लिपटा एक एहराम।

वाक़ियाते

हज़रत फ़ैजू शाह वारसी (रह०)

नम्बर 1 :- किबला हाजी फ़ैजू शाह वारसी आलम पनाह के लिए फल लेने विभिन्न स्थानों पर जाते थे उस ज़माने में (बुटवल) के सन्तरे बड़े प्रसिद्ध थे आप नमाज़ के बड़े पाबन्द थे इसलिए सफर में अपने साथ मुसल्ला, एक बन्धनी या लोटा लेकर अवश्य चलते थे सन्तरे लेने के लिए बुटवल चल दिये रास्ता सुनसान घमासान जंगल पैदल का सफर साथ में अपने पीर मुर्शिद की याद और उनकी मुहब्बत बस इतना सामाने सफर शाह साहब चले जा रहे थे कि कुछ दूर एक शेर हाँफता हुआ दिखाई दिया जो उनकी तरफ चला आ रहा था ऐसी हालत में आपने अपनी जान की परवाह न की बल्कि यह सोचने लगे अब क्या होगा हमारी जान कुरबान आलम नवाज़ पर मगर अब मैं सन्तरे कैसे पहुँचाऊँगा यह शेर ज़िन्दा न छोड़ेगा खा लेगा अच्छा खैर मैं इस पर एक बार वार तो ज़रूर करूँगा ऐसा सोचकर आपने अपनी बधनी उठाई और मारने के लिए पीछे की तरफ ले गये शेर इतनी ही देर में सामने आ चुका था। कुरबान जाइये आलम पनाह की ज़ात पाक पर सरकार आलम पनाह पल में फ़ैजू के पीछ आ गये और बधनी को रोकते हुए बोले अरे फ़ैजू ये क्या कर रहे हो वो तुमको सलाम करने आया है। आवाज़ सुनकर पीछे देखा तो कोई नहीं सामने नज़र डाली तो शेर आपके कदमों में अपना सिर और आँखें मल रहा था। शाह साहब ने शेर के सिर पर हाथ फेरा और कहा कि अब रास्ते में किसी से मत बोलना शेर ने सिर उठाया और बाअदब जंगल की तरफ अपनी राह ली ये फल लेने चल दिये।

शाह फ़ैजू की निराली शान है - जिसको देखो आप पर कुरबान है।

फ़ैजू शाह मियाँ जब वापस सरकार की ख़िदमत में सन्तरे और फल लेकर आये तो सरकार बोले फ़ैजू शेर (खाइस तो नई) सरकार का ये जुम्ला सुनकर फ़ैजू शाह ने जवाब दिया कि सरकार जहाँ आप होंगे वहाँ शेर की क्या मजाल है।

नम्बर 2 :- सरकार आलम पनाह के एक मुरीद ने बेहद परेशान होकर एक ख़त सरकार की ख़िदमत में भेजा कि मैं जब से आपका दामन पकड़ कर आया हूँ जब से आपकी मुरीदी अख्तियार की है तब से मेरा सारा कारोबार बन्द हो गया है। हद से ज़्यादा परेशान हूँ इससे अच्छा तो मैं पहले था दामन इस लिए पकड़ा था कि तरक्की (उन्नति) होगी बाज़ आये आपको अपना पीर बनाकर कृपया आप मेरा नाम अपने सिलसिले से काट दें ख़त आया फ़ैजू शाह को मिला चूँकि फ़ैजू शाह पढ़े नहीं थे हज़रत रहीम शाह साहब सरकार की ख़िदमत में आ चुके थे जो पढ़े लिखे थे फ़ैजू शाह ने ख़त रहीम शाह को दिया और कहा पहले पढ़कर हमको सुनाओ। ख़त पढ़ा गया दोनों को तहरीर बुरी लगी। फ़ैजू शाह ने रहीम शाह से कहा कि जब सरकार ख़त पढ़ने का हुक्म दें तो तुम यह वाक्य मत पढ़ना दोनों की राय एक हो गयी। दोपहर को खाना खिलाने के बाद फ़ैजू शाह सरकार से बोले कि सरकार एक ख़त आया है आलम पनाह ने इरशाद फरमाया हाँ फ़ैजू खत आया है मालूम भी है और हम जानते भी हैं फ़ैजू शाह ख़त पढ़वाओ रहीम शाह ने वो वाक्य छोड़कर पूरा खत पढ़ दिया फ़ैजू शाह की तरफ इशारा करते हुए सरकार ने फरमाया (फ़ैजू सुनो 14 तवक़ के बीच में अगर कोई भुनगा भी पंख हिलाता है तो उसकी खबर मुझ को रहती है) उसको लिख दो कि शेर का पकड़ा हुआ शिकार कभी खाली नहीं जाता जब पार उतार देगा तब छोड़ देगा।

नम्बर 3 :- एक बार सरकार आलम पनाह जुमे (शुक्रवार) के दिन तहसील फतेहपुर जिला बाराबंकी में हज़रत मुस्तक़ीम शाह साहेबा के घर पर तशरीफ फरमाँ थे और अनेक लोग मौजूद थे जुमे का वक्त करीब आया दस्तूर के मुताबिक फ़ैजू शाह नमाज़े जुमा अदा करने के लिए मस्जिद चले गये किसी आवश्यक कार्य से सरकार आलम पनाह ने हज़रत शाह साहब को आवाज़ दी 'फ़ैजू-फ़ैजू' लोगों ने जवाब दिया हज़रत, फ़ैजू शाह नमाज़ पढ़ने गये हैं कुछ देर बार सरकार आलम ने फिर आवाज़ दी 'फ़ैजू-फ़ैजू' लोगों ने जवाब दिया मियाँ वह नमाज़ पढ़ने गये हैं। तीसरी बार सरकार ने फिर पुकारा 'फ़ैजू-फ़ैजू' फिर वही जवाब लोगों ने दिया। आलम पनाह ने लोगों को आज्ञा दी कि तुम लोग जाओ और फ़ैजू जिस हाल में हों मेरे पास उनको फौरन लाओ। आज्ञा के अनुसार लोग मस्जिद गये और उनको सजदे में पाया मगर क्या होता फरमाने सरकार आलम नवाज़ के लोग फ़ैजू शाह को सजदे की हालत से खींच लाये और सरकार के सामने हाज़िर किया आलम पनाह ने फ़ैजू की तरफ कश्फ भरी निगाह डालते हुए शाह साहब से कहा (क्या फ़ैजू अब भी तुमको नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत है रोज़े रखा करो रोज़े) बस इस आज्ञा के अनुसार फ़ैजू शाह ने रोज़े रखना शुरू कर दिया और मुसलसल 27 वर्षों तक लगातार रोज़े रखे।

नम्बर 4 :- सन् 1872 ई0 में आलम पनाह ने फ़ैजू शाह से इरशाद कि (फ़ैजू न हो शादी कर लो) फ़ैजू ने जवाब दिया कि सरकार आप का दामन मुझे मिल गया मैं आपका गुलाम बन गया हूँ अब मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रही दीन दुनिया सरकार आपने इस नाचीज़ को प्रदान कर दी है बस सरकार मुझे आपकी मुहब्बत ही चाहिए मैं शादी (विवाह) नहीं करूँगा। आलम पनाह ने इरशाद फरमाया अच्छा (फ़ैजू शादी मत करना)।

कुछ समय बाद सरकार आलम पनाह ने फ़ैजू शाह को हुक्म दिया कि (फ़ैजू न हो तुम दुनिया देख आओ) इरशाद सुनते ही फ़ैजू शाह ने अर्ज़ किया कि सरकार क्या मतलब, दुनिया देखने से क्या मुराद है। आलम पनाह ने कहा हाँ फ़ैजू जाओ और देखना कि दुनिया में पड़ने के बाद आदमी कितनी जल्दी और कैसे अपनी कही हुई बात को भूल कर अपने वचन से हट जाता है। दुनिया कितनी रंगीन है और कैसे-कैसे लोग इस दुनिया में रहते हैं। आज्ञा सुनकर हाजी फ़ैजू शाह वारसी सरकार के कदमों में सिर रखकर और सलाम करके देवाँ शरीफ से चल दिये। घूमते घामते कई महीनों के बाद झाँसी एक ज़मीदार के यहाँ रात में रुके। ज़मीनदार की एक नौजवान लड़की जो निहायत संजीदा खूबसूरत जिसका नाम महेलका था। फ़ैजू मियाँ पर आशिक हो गई उसने फ़ैजू शाह से 2-4 दिन तक रुकने को कहा शाह साहब को भी कुछ लगाव बढ़ा और महेलका की बात पर राजी हो गये। 2-4 दिन क्या 2-4 महीने बीत गये संक्षेप ये कि फ़ैजू मियाँ भी उस लड़की को चाहने लगे और मुहब्बत बेहद बढ़ गयी। लड़की ने अपनी माता से कहा कि अगर मैं शादी करूँगी तो सिर्फ फ़ैजू मियाँ से वरना शादी ही न करूँगी माता ने बहुत समझाया लड़की ने कहा कि आप अब्बू जान से मेरी बात कह दें माता ने यह बात अपने पति से बता दी भगवान की मरज़ी कि ज़मीनदार राज़ी हो गये उन्होंने यह सारी बातें फ़ैजू मियाँ से बतायी और अर्ज़ किया कि मियाँ आपका क्या खयाल है। फ़ैजू मियाँ प्रसन्न पूर्वक तैयार हो गये। बोले (हाँ, हाँ ठीक है) हमें स्वीकार है। इन्तेज़ाम शुरू होने लगा दूसरे दिन निकाह होना तय हो गया। रात में फ़ैजू मियाँ बड़ी खुशी खुशी बिस्तर पर लेटे। जैसे ही उनकी आँख लगी कुरबान जाऊँ आलम पनाह की ज़ात पाक पर कि मेरे सरकार अपने हर चाहने वाले के कितने करीब रहते हैं (आलम पनाह ने फ़ैजू शाह को जगाया और बोले क्या फ़ैजू दुनिया में पड़ गये यही है दुनिया, आदमी कितनी जल्दी अपना रंग बदलता है और अपना वादा भूलता है देख लिया।) बस फिर क्या था फ़ैजू शाह के होश दंग रह गये चुपके से उठे दरवाज़ा खोला रात में ही ज़मीनदार के घर से देवा के लिए चल दिये रास्ते भर रोते, माफी मांगते उदास बेहाल, परेशान, आँखों में आँसू लिये सरकार की ख़िदमत में हाज़िर

हुए और कदमों में गिरकर माफी माँगी सरकार आलम पनाह ने कहा। क्यों परेशान हो हमने ही तुमको दुनिया देखने भेजा था। फ़ैजू बोले सरकार माफ फरमायें वरना हम न दुनिया के रहेंगे न ही दीन के। हमारा सब कुछ लुट जायेगा आलम नवाज़ ने शफ़कत का हाथ फेरा और बोले (फ़ैजू तुम हमको भूले थे हम तुमको नहीं)।

नम्बर 5 :- बादशाह ज़मीदार ग्राम कबरा जिला सीतापुर और लताफत हुसैन ज़मीदार ग्राम रमदाना जिला सीतापुर दोनों ज़मीदारों में 11 ग्रामों के बाबत एक मुकदमा शुरू हुआ। कई वर्षों तक चलता रहा और कई बार बादशाह हुसैन हारे अन्त में अपील मन्जूर होकर मुकदमा लन्दन पहुँचा इसी बीच बादशाह हुसैन को मालूम हुआ कि आजकल बनेहरा के मियाँ फ़ैजू शाह सरकार वारिस पाक की ख़िदमत में हैं सरकार उनको बहुत चाहते हैं और सरकार अपना हर काम फ़ैजू मियाँ से ही लेते हैं ध्यान रहे कि बनेहरा से कबरा सिर्फ दो कोस की दूरी पर है इसी नाते हमवतनी होने की वजह से सोचने लगे कि अगर फ़ैजू मियाँ चाहें तो यह मुकदमा हम जीत सकते हैं। इसलिए बादशाह हुसैन देवा शरीफ आये सरकार की ख़िदमत में हाज़िरी देने के बाद फ़ैजू मियाँ को अलग एकान्त में बुला ले गये और सारी बातें बताईं और कहा कि मियाँ अगर आप चाहें तो सरकार से कहकर हमारा यह काम करा दें तो यह आपका एहसाने अज़ीम हम पर होगा। हम ताउम्र यह एहसान आपका नहीं भूलेंगे फ़ैजू मियाँ ने बादशाह हुसैन से वादा कर लिया कि तुम जाओ हम सरकार आलम नवाज़ से कह कर यह मुकदमा ज़रूर जितवा देंगे। बादशाह हुसैन खुश होकर चले गये।

शाम को फ़ैजू मियाँ सरकार का सारा काम करने के बाद फ़ैजू ने अर्ज़ किया कि सरकार बादशाह हुसैन और लताफत हुसैन के बीच एक मुकदमा चल रहा है। सरकार ने कहा हाँ फ़ैजू हमको सब मालूम है। बादशाह हुसैन नाहक पर है और लताफत हुसैन हक पर है। फ़ैजू कुछ मत कहो! फ़ैजू शाह खामोश हो गये दूसरे दिन फिर शाम को शाह साहब ने कहा कि हुजूर लताफत हुसैन हार जायें और बादशाह हुसैन जीत जायें आलम पनाह ने फरमाया (फ़ैजू याद रखो ये हक तलफी है और हकतलफी कराना अच्छी बात नहीं होती ऐसा मत सोचो यह हक लताफल का है उसी को मिलना चाहिए। शाह साहब फिर खामोश हो गये तीसरे दिन फ़ैजू शाह मियाँ ने एक धारदार तेज़ चाकू निकाला और बोले कि सरकार आज फैसला होना है आप यह कर दें कि बादशाह हुसैन जीत गये और लताफत हुसैन हार गये अगर आप यह नहीं कहते हैं तो मैं आपके सामने अपना पेट फाड़कर मर जाऊँगा। सरकार ने मना किया फ़ैजू मरो मत मगर याद रखो (फ़ैजू हक तलफी मत कराओं वरना तुम्हारे हक में भी हक तलफी होगी फ़ैजू सोच लो फिर मत कहना।) फ़ैजू मियाँ बोले सरकार अब चाहे

जो कुछ भी हो हमने बादशाह हुसैन से वादा कर लिया है बसस आप कह दें आलम पनाह ने कहा जाओं फ़ैजू जैसा तुम कहते हो वैसा ही होगा! (सरकार ने फरमा दिया कि बादशाह हुसैन जीत गये और लताफल हुसैन हार गये।)

अगली पेशी होने पर फैसला सुना दिया गया कि बादशाह हुसैन जीत गये और लताफत हुसैन हार गये।

नम्बर 6 :- सरकार आलम पनाह हज़रत हाजी फ़ैजू शाह से फरमाते रहते थे कि फ़ैजू हमारी मन्ज़िल इश्क है जो हम से मुहब्बत करे वही हमारा है। एक दिन आलम पनाह ने फ़ैजू शाह से कहा सुनो फ़ैजू मैं अपना एक इकरार नामा हकीम शेर मोहम्मद खाँ से लिखवाकर तुम्हें दिये देता हूँ और जब कोई बड़ा हाकिम तुम से मांगे तो उसको ज़रूर दिखा देना।

नक़्ल इक़रार-नामा

मन्कि सैय्यद वारिस अली शाह वल्द कुरबान अली शाह साकिन देवाँ परगना व तहसील नवाबगंज बाराबंकी।

चूँकि हमने तुम लोगों को मोहतमिम मिर्ज़ा मुस्तक़ीम शाह का मुक़र्रर किया क्योंकि हमने मुस्तकीम शाह से इकरार किया था कि हमारा तुम्हारा साथ दीन व दुनिया में है जो कोई देवे वाला और कोई कुछ कहे तो वह बातिल है और हमारे यहाँ मन्ज़िल इश्क की है जो कोई दावा जानशीनी का करे वह भी बातिल है। हमारे यहाँ जो कोई हो चमार हो या ख़ाकरोब हो हम से मुहब्बत करे वही हमारा है।

अलमरकूम 7 नवम्बर 1889 ई0

अलअ़ब्द	*गवाह शुद*	*गवाह शुद*
वारिस अली शाह	तुराब अली ज़मीनदार	नूर मोहम्मद शाह
बकलम हकीम शेर मो0 खाँ	साकिन भिठौली	ख़ादिम, राक़िम हाज़ा

बख़शिश अली ज़मीनदार (गदियां)

नोट:- इस नकल को पुरानी हयात वारिस पुस्तक से लिखा गया है। हाजी फ़ैज़ू शाह वारसी ने इस इकरार नामे को बतौर अमानत मुन्शी नादिर हुसैन साहब नगरामी के पास रख दिया और कहा कि इसे आप अपने पास रख लें जब हमको ज़रूरत होगी तब हम आप से मांग लेंगे।

नम्बर 7 :- सरकार वारिस पाक का मिज़ाज मुबारक सन् 1903 ई0 से नासाज़ रहने लगा और आपने मुसतक़िल देवा शरीफ में ही क़याम फरमाया बीमारी बढ़ती गई मगर कभी आलम पनाह ने तकलीफ का इज़हार नहीं किया। 30 मुहर्रमुलहराम 1323 हिजरी रात दस बजे हकीम मोहम्मद याकूब बेग से इरशाद फरमाया (हम चार बजे अपने रफ़ीके आ़ला के पास जायेंगे) उस वक्त हाजी फ़ैज़ू शाह वारसी आलम पनाह को शहद ठन्डे पानी में मिलाकर पेश कर रहे थे इतना सुनते ही फ़ैज़ू शाह बेचैन हो गये और अर्ज़ किया फिर हुजूर मेरा क्या होगा? मैं आपके सामने ही मर जाऊँगा इतना कहकर एक धारदार तेज़ चाकू निकाला और खुदकशी (आत्महत्या) करने के लिए तैयार हो गये। सरकार आलम पनाह ने फ़ैज़ू शाह का हाथ पकड़कर कहा फ़ैज़ू ऐसा मत करो अभी तुम को वारसियत का बड़ा काम करना है। (सुनो फ़ैज़ू तुम मेरे बाद मेरा बिस्तर लगा दिया करना मैं तुमको इसी तरह बिस्तर पर मिलूँगा जिस तरह इस वक्त मैं मुम्हारे सामने मौजूद हूँ।) इतना सुनते ही फ़ैज़ू शाह ने चाक़ दूर फेंक दिया और ख़िदमते सरकार में लग गये।

यकुम सफ़र 1323 हि0 मुताबिक़ 7 अप्रैल 1905 ई0 प्रात: चार बजकर तेरह मिनट पर आख़िरी वक्त आलम नवाज़ ने हाजी फ़ैजू शाह वारसी के दस्ते मुबारक से शरबते शहद नोश फरमाया और अपने रफीके आला से जा मिले।

नोट:- वारसी फुक़रा में हज़रत हाजी फ़ैजू शाह वारसी इसलिए अपना ख़ास मक़ाम रखते हैं क्योंकि इतने दिनों तक और ऐसी ख़ास ख़िदमत किसी वारसी फुक़रा को नसीब नहीं हुई।

वारिस पाक के हुक्म के मुताबिक हाजी फ़ैजू शाह वारसी सरकार का बिस्तर लगाते रहे। फ़ैजू शाह के विसाल के बाद यह काम हज़रत शाहिद अली शाह वारसी अन्जाम देते रहे हज़रत शाहिद बाबा के विसाल के बाद उनके बड़े पुत्र मोहम्मद अमीन शाह वारसी इसी काम को अन्जाम देते रहे बिस्तर लगाने का काम अन्जाम देना सिर्फ हज़रत हाजी फ़ैजू शाह वारसी के ही खानदान के फर्द (सदस्य) का ही हक बनता है। (आज्ञानुसार सरकार वारिस आलम पनाह) जैसा आपने पीछे पढ़ा है।

नम्बर 8 :- सरकार आलम पनाह के विसाल के बाद सै0 मो0 इब्राहीम शाह वारसी ने हज़रत फ़ैजू शाह से कहा कि सुनो फ़ैजू जिस तरह से तुम सरकार की खिदमत करते थे अब उसी तरह से हमारी भी ख़िदमत किया करो फ़ैजू शाह ने जवाब दिया मैंने सिर्फ सरकार की ख़िदमत की है और मैं सिर्फ उन्हीं का गुलाम हूँ मैं तुम्हारी ख़िदमत हरगिज़ न करूँगा चाहे तुमको अच्छा लगे या बुरा। ज़मीनदारी ज़माना था फ़ैजू शाह परदेसी इसलिए किसी ने भी उनका साथ नहीं दिया। देवाँ के रईसों ने मिलकर हाजी फ़ैजू शाह से सारा सामान कुन्जियाँ और मुबलिग 5000/- चांदी का सिक्का (रुपया) छीन लिया और देवा से भगा दिया। (वाकिया नं0 5 से साबित हुआ कि सरकार ने फरमाया था कि फ़ैजू हक़तलफी मत कराओ वरना तुम्हारे हक में भी हक़तलफी होगी) फ़ैजू शाह को निकालने के बाद सन् 1906 ई0 में खुद हज़रत सैय्यद मो0 इब्राहीम शाह सज्जादानशीन बन गये और मज़ार अक़दस की देखभाल करने लगे। सै0 मो0 इब्राहीम शाह का विसाल सन् 1915 ई0 में हो गया। जिनका मज़ार आस्ताना आलिया की पश्चिम की ओर बुर्जी में बना हुआ है।

हाजी फ़ैजू शाह वारसी देवा से निकलकर अनेकों स्थानों से होतेहुए अ़सिर मग़रिब के मध्य रियासत रामपुर उस स्थान पर आये जहाँ एक कार्यक्रम के उपलक्ष में लोगों की बड़ी भीड़ जमा थी। फ़ैजू शाह दूर एक पेड़ की जड़ पर नीचे जाकर बैठ गये और ज़िक्रे वारिस में लग गये। एक साहब ने फ़ैजू मियाँ के एहराम की ओर इशारा करते हुए कहा ये वारसी लोग नमाज़ नहीं पढ़ते हैं। फ़ैजू मियाँ समझ गये उनकी आँखों में आंसू आ गये और सरकार का वो फरमान (वाकिया नं0 3 में फ़ैजू रोज़े रखा करो रोज़े याद आया कि फ़ैजू क्या तुमको अब भी नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत है रोज़े रखा करो रोज़े।)

कुछ देर के बाद अज़ान हुई। छीटा कशी करने वाले ही साहब ने इमामत की अक़ामत से फ़ारिग होने के बाद इमाम साहब सजदे में गये तो उनके सिर को ज़मीन ने पकड़ लिया और इमाम साहब के सिर पर खड़ाऊँ चलने लगे। जब काफी देर तक मुकतदियों को इमाम की कोई आवाज़ न मिली तो वह लोग सिर उठाकर देखने लगे कुछ लोग तो नियत तोड़कर इमाम के पास आये और सजदे से न उठने का कारण पूछा। इमाम बोले कि मेरा सिर ज़मीन पकड़े हुए है और ऐसा लग रहा है कि सिर पर खड़ाऊँ चल रहे हैं जाओ जल्दी जाओ उस वारसी फकीर से माफी मेरी तरफ से मांगो लोग फ़ैजू मियाँ के पास आये और माफी माँगने लगे फ़ैजू शाह बोले कैसी माफी लोगों ने बताया कि इमाम साहब का सिर ज़मीन से नहीं उठ रहा है आप उनको माफ कर दें। (शाह साहब बोले हम का जानै जीका बुरा कहै हा वो खुदैय माफी करी) कुछ देर बाद इमाम साहब का सिर ज़मीन से उठा और वहाँ मौजूद सभी लोग हाजी फ़ैजू शाह के दस्ते मुबारक से सिलसिले वारसी में दाखिल हुए एक रात रामपुर में क़याम करने के बाद फ़ैजू शाह मियाँ चल दिये और दरभंगा (बिहार) तशरीफ लाये और हज़रत अहद शाह वारसी के यहां रहने लगे। इधर देवां शरीफ में हज़रत सैय्यद इब्राहीम शाह वारसी के विसाल के बाद सन् 1915 ई0 में देवा शरीफ के कई ज़मीनदारों रईसों ने मिलकर आस्ताना आलिया पर क़ब्ज़ा कर लिया और अलग-अलग सभी ने दावा जानशीनी का दायर किया मुकदमा तकरीबन दो वर्षों तक चलता रहा। हर ज़मीनदार अपने आपको जानशीने वारिस पाक का साबित कर रहा था, मगर लोगों के सपने पूरे नहीं हुए सन् 1917 में श्री महमूद मियाँ साहब, श्री शैदा मियाँ साहब और शेख श्री इनायत उल्लाह साहब ताल्लुकेदार सैदन पुर ने सलाह करके सर जसटिस सैय्यद शरफउद्दीन साहब वारसी हाई कोर्ट बांकीपुर पटना (बिहार) को बुलाया, जज साहब आये और कोठी महाराजा अली मोहम्मद खाँ साहब के यहाँ रुके। जज साहब से उन लोगों ने सारी बातें बतलायीं जज साहब ने सब सुनने के बाद हज़रत हाजी फ़ैजू शाह साहब वारसी को याद किया मगर उस वक्त फ़ैजू शाह देवां में मौजूद नहीं थे। लोगों ने बताया कि फ़ैजू शाह को ज़्यादा बैठक बस्तुवारा के रईस मुनीर साहब से थी इसलिए उन्हीं से मालूम हो सकता है तब लोग बस्तुवारा गये, पूछने पर मुनीर साहब ने बताया कि फ़ैजू शाह यहाँ नहीं आये हो सकता है कि वो अहद शाह वारसी के पास दरभंगा गये हों तब लोगों ने मुनीर साहब से कहा कि अगर आप हज़रत फ़ैजू शाह वारसी को दरभंगा से बुला ला दें तो यह आपका एहसाने अज़ीम देवा वालों पर होगा और इस मुकदमें का हल कुछ न कुछ निकल आयेगा। मुनीर साहब तैयार हो गये और हज़रत हाजी फ़ैजू शाह को दरभंगा से बुला लाये। फ़ैजू शाह ने जज साहब से मुलाकात की और पूछा

(भैय्या जज साहब हमका काहे बुलाय हो) जज साहब ने जवाब दिया अरे शाह साहब आपकी बड़ी सख्त ज़रूरत दर पेश थी आप बराय मेहरबानी यह बतायें कि (हमारी मन्ज़िल इश्क है, हमारा कोई सज्जादानशीन नहीं है जो कोई दावा जानशीनी का करे वो बातिल है) ये सरकार आलम पनाह का फरमान ज़ुबानी है या तहरीरी है। जज साहब ने तहरीर मांगा। फ़ैज़ू शाह नगराम गये और आलम पनाह का वो इकरार नामा जिसे उन्होंने मुन्शी नादिर हुसैन के पास बतौर अमानतन रखा था, ले आये और जज साहब को दे दिया जज साहब ने पढ़ा बेहद खुश हुए और बोले कि अब मुकदमे का हल निकल आया। जज साहब ने उस तहरीर को लखनऊ के इजलास पर दिखा दिया जोडिशियल कमिश्नर खुश हुए मुकदमा बहाल हुआ और सन् 1917 में ट्रस्ट कमेटी क़ायम हुई इतना काम अन्जाम देने के बाद फ़ैज़ू शाह चलने लगे तब सैय्यद शरफउद्दीन जज बान्कीपुर ने फ़ैज़ू शाह का हाथ पकड़ कर कहा कि हरगिज़ न जाने दूँगा क्योंकि आपने ही इस मुकदमे को जिताया है आपका यह एहसान अज़ीम देवा वालों और हम सब पर है। अगर आप यह तहरीर न देते तो यह मुकदमा हरगिज़ कभी भी बहाल न होता न ही कोई फैसला हो पाता सदैव चलता रहता इसलिए अब आप यहीं रहें और ख़िदमते ख़ास का काम अन्जाम दें। आपके ख़ानदान (परिवार) का एक फर्द (आदमी) इसी ख़िदमत ख़ास पर हमेशा लिया जायेगा यह मौखिक भी कहा और एक तहरीर भी लिख दी जो ट्रस्ट कमेटी में मौजूद है।

हज़रत हाजी फ़ैज़ू शाह वारसी ने सन् 1917 से लेकर सन् 1936 तक आस्ताना आलिया पर रहकर ही ख़िदमते ख़ास के फराएज़ अन्जाम दिये और ज़ईफी के आलम में उन्होंने मुकाम बनेहरा से अपने भतीजे (देहात में बड़े अब्बा को दादा भी कहते हैं इसलिए अपने पोते) शाहिद अली को बुलवाया और कहा कि अब मैं ज़ईफ हो चुका हूँ बीमारी भी रफ्ता रफ्ता बढ़ रही है इसलिए हमारा सारा काम तुम किया करो हमारी ख़िदमत भी करो आस्ताना आलिया पर भी मेरे साथ काम किया करो। इसी दौरान हज़रत हाजी फ़ैज़ू शाह ने एक दरख्वास्त ट्रस्ट कमेटी को दी कि अब मैं ज़ईफ हो रहा हूँ इसलिए आस्ताने आलिया पर जो भी काम मैं करता था वो अब शाहिद अली किया करेंगे। ट्रस्ट कमेटी ने सैय्यद शरफउद्दीन की तहरीर की रोशनी में हज़रत फ़ैज़ू शाह की दरख्वास्त को मन्ज़ूर कर लिया एक तहरीर मैनेजर आस्ताना मरहूम महमूद मियाँ साहब ने लिख कर फ़ैज़ू शाह को दे दिया कि शाहिद अली आस्ताना आलिया पर ख़िदमते ख़ास का काम अन्जाम दें।

अगस्त 1936 ई0 में हज़रत फ़ैज़ू शाह वारसी ने जनाब शाहिद अली को एहराम अ़ता कर नाम शाहिद अली शाह वारसी रखा हज़रत शाहिद अली 14 वर्ष

की आयु में क़िबला आलम नवाज़ के दस्ते मुबारक से सिलसिले वारसिया में दाखिल हुए थे, और आलम पनाह ने जनाब शाहिद अली के सिर पर हाथ रखकर हज़रत फ़ैजू शाह को मुखातिब करके फरमाया था, कि फ़ैजू यह शाहिद हमारा है वारसियत को बुलन्द करेगा यह सुनकर फ़ैजू शाह ने सिर निगूँ होकर अर्ज़ किया था कि सरकार आप की नवाज़िश है करम है।

हज़रत शाहिद अली सन् 1936 इं0 से आस्ताना आलिया पर ख़िदमत ख़ास का काम अन्जाम देने लगे और ख़ादिम ख़ास के नाम से मशहूर हो गये।

ध्यान रखिये—

सन् 1901 में सरकार आलम नवाज़ फ़ैजू शाह के साथ। बैसाख की नवमी के दिन फ़ैजू शाह के घर बनेहरा तशरीफ ले गये थे। घर में 2 घण्टे आराम करने के बाद फ़ैजू की बग़िया में तशरीफ लाये बग़िया देख कर आलम पनाह ने फ़ैजू से इरशाद फरमाया (फ़ैजू बग़िया बहुत अच्छी है फ़ैजू तुम इसी में आराम करना) फ़ैजू शाह यह यादगार मनाने हर साल बैसाख की नौमी को बनेहरा तशरीफ ले जाते और इसी तारीख को कुल सरकार आलम पनाह करते थे बाद में इसी यादगार को मनाने हज़रत शाहिद अली शाह हर साल जाते और कुल आलम पनाह और कुल हज़रत फ़ैजू शाह करने लगे। धीरे-धीरे हज़रत शाहिद अली शाह ने तीन दिनों का एक मेला बैसाख की 8, 9, 10 तारीखों में लगवाना शुरू कर दिया। सन् 1996 ई0 से हज़रत शाहिद अली शाह वारसी के छोटे पुत्र जनाब मो0 यासीन वारसी सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त होकर मुसतकिल हज़रत फ़ैजू शाह वारसी के आस्ताने पर रहने लगे। उन्होंने पहुँचकर तो एक अनोखा रंग जमा दिया कि जैसा लोग कभी सपने में नहीं सोच सकते थे। उस घनघोर जंगल को ऐसा आबाद किया कि बस वहाँ की रौनक देखते ही बनती है। रब्बे करीम की रहमत आलम पनाह के करम की वो नूरानी कैफियत शाने वारसियत का वह नुज़ूल हर दम नज़र आता है। आस्ताना हाजी फ़ैजू शाह का तामीरी काम इतना ज़्यादा करा दिया है कि आस पास के गाँव के आदमी देखकर दंग रह गये हाज़िर होने वाले ज़ाएरीनों, अतिथियों और अ़कीदतमन्दों के रहने के लिए कई हुजरों की तामीर कराई है। पानी का उचित प्रबन्ध कराया अभी भी आस्ताना आलिया का तामीरी काम चल रहा है। हर रोज़ अ़कीदतमन्दों का मेला लगा रहता है। आस्ताना फ़ैजू शाह वारसी का वार्षिक मेला 4 दिनों तक चलता है जिनमें 9 बैसाख को कुर्ब व जवार (आस पास तथा दूर दूर से) दुकानें आती हैं और हज़ारों की संख्या में अ़कीदत मन्द शिरकत करते हैं और अपनी दिली मुरादें पाते हैं आस्ताना फ़ैजू शाह वारसी में हाज़िरी देने पर यह महसूस होता है कि उन्नीसवीं सदी ईसवी के बुज़ुर्ग हज़रत हाजी वारिस अली शाह के खादिम ए खास का आस्ताना है। वारिसे आलम पनाह

की नवाजिशों का सिला है और इसका पूरा अनुभव होता है कि हज़रत फ़ैजू शाह वारसी वारिस आलम पनाह के सच्चे आशिक, राज़दार थे और आपको आलम पनाह ने बेहद नवाज़ा था। यही वजह है और ख़िदमत ख़ास का सिला है कि हज़रत फ़ैजू शाह अपने हर अक़ीदत मन्द की आर्दिक इच्छा पूरी करते हैं और आने वाले अपनी मुराद पा जाते हैं अपना खाली दामन भर ले जाते हैं।

लग रहा मेला अज़ीमुश्शान है,
ख़िदमते वारिस का ये फ़ैज़ान है।।

(असरार वारसी)

हज़रत फ़ैजू शाह वारसी की बीमारी और विसाल

जुलाई सन् 1936 ई0 से ज़ईफी और कमज़ोरी का आलम बढ़ता गया। बीमारी ने साथ ऐसा पकड़ा कि साथ छूटना मुश्किल हो गया। कभी बुखार और कभी जूड़ी दिन प्रतिदिन बीमारी बढ़ने लगी और वक्त क़रीब आता गया धीरे-धीरे बुखार ने अपना रंगजमा लिया। लगातार 5 माह बुखार आता रहा अजब फ़क़ीरी हाल था कि कभी ऐसा लगता कि फ़ैजू मियाँ कभी बीमार ही नहीं हुए और कभी इतना बीमार कि बोलना भी मुश्किल था। एक दिन में कई बार फ़ैजू मियाँ के हालात बदलते दिन रात बीतते गये और ज़िन्दगी के दिन पूरे होने ही वाले थे कि 19 ज़ीक़ादा को आपके बहुत से जानिसार आपकी आयादत के लिए आये आपने सभी से बात की और सबको दर्से वारसीयत दिया जब लोगों ने आपका मिज़ाज पूछा तो आप बोले कि अल्लाहो बाकी व मिन कुल्ले फ़ानी बस वक्त बिल्कुल करीब है मुस्कुराते हुए बोले और लोगों को नसीहत की कि झूठ से गुरेज़ करना, सच पर कायम रहना, फरमाने रब और फरमान पीर की पैरवी हमेशा करना इतना कहकर आपने आँख बन्द कर ली।

तारीख 20 ज़ीक़ादा 1358 हिजरी को हज़रत फ़ैजू शाह ने शाहिद बाबा को हुक्म दिया कि बनेहरा से बैलगाड़ी मँगवा लो शाहिद बाबा ने कुछ लोगों को बनेहरा से गाड़ी लाने के लिए भेज दिया।

तारीख 22 ज़ीक़ादा 1358 हिजरी दिन जुमेरात वक्त 9 बजे दिन को बनेहरा से लोग बैलगाड़ी ले आये। कुछ देर के बाद फ़ैजू मियाँ ने पूछा। क्या शाहिद गाड़ी आ गयी शाहिद बाबा ने जवाब दिया ''जी दादा'' गाड़ी आ गयी फ़ैजू शाह ने सबको हुक्म दिया कि सब लोग तैयारी कर लो बस थोड़ी देर है हम सबको बनेहरा चलना है। अब हम वहीं आलम पनाह के हुक्म के मुताबिक अपनी बग़िया में हमेशा के लिए आराम करेंगे।

बतारीख़ 22 ज़ीक़ादा 1358 हिजरी मुताबिक़ 13 जनवरी 1937 ई0 9 पूस 1344 फ़सली दिन जुमेरात बवक्त 11 बजे दिन में हज़रत हाजी फ़ैज़ू शाह वारसी ने 110 वर्ष की आयु में देवाँ शरीफ में परदा फरमाया सरकार आलम पनाह वारिसे पाक की आज्ञानुसार हाजी फ़ैज़ू शाह वारसी बनेहरा में अपनी बग़िया में आराम फरमाँ हैं।

हर साल पूस की नवमी को ख़ानक़ाह हज़रत शाहिद अली शाह वारसी में हज़रत फ़ैज़ू शाह वारसी का कुल होता है।

विशेष नोट—

हज़रत हाजी फ़ैज़ू शाह वारसी ने सरकार आलम पनाह की ख़िदमत आलम पनाह की हयाते ज़ाहिरा में 44 वर्ष तथा आस्ताना आलिया वारिसे आलम पनाह की ख़िदमत और ख़ादिमे ख़ास के फरायज़ 23 वर्षों तक अन्जाम दिये। इस अर्से में फ़ैज़ू मियाँ ने हज़ारों लोगों को सिलसिलये वारसिया में दाखिल किया और बहुत कम लोगों को एहराम अ़ता किया।

वाक़ियाते फ़ैज़ू शाह में मैंने जो भी कुछ लिखा है यह सब मैंने अपने दादा जान हज़रते शाहिद अली शाह वारसी की ज़ुबाने मुबारक से सुना है।

मनक़बत

हज़रत हाजी फ़ैज़ू शाह वारसी ख़ादिम ए ख़ास वारिस आलम पनाह

क़सरे दिल उसका जगमगाया है,
आपके दर पे जो भी आया है।
मुद्दआ उसने अपना पाया है,
जिसने दिल आपसे लगाया है।
जिसको हासिल है आप की निस्बत,
रहमत ए हक का उसपे साया है।
आये हैं आशिक़ाने फ़ैज़ू सब,
ख़ादिम ए ख़ास ने बुलाया है।
उम्र भर की है ख़िदमते वारिस,
ये शरफ आप ही ने पाया है।
वक्ते नज़ह हुज़ूरे वारिस को,
शरबते शहेद भी पिलाया है।
वारसी ख़ादिमों में ख़ादिमे ख़ास,
ये लक़ब भी तुम्हीं ने पाया है।
अब तो हो जाय हम पे लुत्फो करम,
गरदिशों ने बहुत सताया है।
हो निगाहे करम इधर आक़ा,
दर पे तेरा गुलाम आया है।
जाम क़िस्मत संवर गयी उसकी,
शाहे फ़ैज़ू का जिस पे साया है।

(ख़लील वारिस जाम-वारसी)